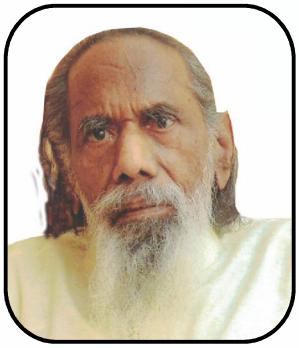

SHRI MARUTI BHUJANGRAO CHITAMPALLI

Shri Maruti Bhujangrao Chitampalli is a renowned Indian naturalist, wildlife conservationist, and Marathi author, widely respected for his contributions to forest conservation and environmental awareness.

2. Born on 5th November, 1932, Shri Chitampalli pursued his early education at T.M. Pore School and Northcote Technical High School in Solapur (1952-53). He completed his higher secondary studies at Dayanand College in Solapur. In 1958, he enrolled at the State Forest Service College in Coimbatore, Tamil Nadu, where he underwent a two-year forestry program, graduating in 1960. This education laid the foundation for his distinguished career in the Maharashtra Forest Department, he joined the Maharashtra State Forest Department, where he served until retiring as the Deputy Chief Conservator of Forests.

3. Shri Chitampalli played a pivotal role in the development and management of several wildlife sanctuaries and national parks in Maharashtra, including the Karnala Bird Sanctuary, Navegaon National Park and Nagzira Wildlife Sanctuary. Beyond his administrative contributions, he is celebrated for his literary works in Marathi, which have significantly enhanced public understanding of wildlife and nature. His notable publications include "Jangalachi Duniya," “Chakavachandan,” "Nilavanti," and "Ranvata," among others. He has written more than 18 books on wildlife, nature and forestry in Marathi.

4. Shri Chitampalli pursued traditional Sanskrit literature studies and later expanded his linguistic knowledge by studying German and Russian**.** He enrolled in a certificate course on Environmental Studies in Ancient Indian Literature offered by Kalidasa Sanskrit University, Ramtek, successfully completing it. A distinguished ornithologist, he contributed significantly to Marathi terminology in ornithology. He coined "Kakagar" for the English term "Rookery" (a crow colony) and "Sarangagar" for "Heronry" (a breeding site for herons and storks). He introduced "Raatnivaara" as a Marathi equivalent for "Roosting Place" and made terms like "Raimunia" (for the plant *Lantana Camara)* and "Amaltash" (for the *Golden Shower Tree)* known to Marathi readers. His meticulous documentation of tribal culture, nature's mysteries and wildlife behavior has expanded Marathi's scientific vocabulary and environmental awareness. The Government of Maharashtra has officially declared 'Pakshi Saptah' (Bird Week) as a state event, celebrating his contributions.

5. Shri Chitampalli has received numerous prestigious awards for his contributions to wildlife conservation, literature, and forestry. His book **रानवाटा** (1991) earned the Maharashtra State Literature Award (1991-92), Bhairuratan Damani Literature Award (1991) and Mrunmayi Literature Award (1991). **जंगलाचं देणं** (1985) received the Maharashtra State Literature Award (1989) and Vidarbha Sahitya Sangh Award (1991), while **रातवा** (1993) was honored with the Maharashtra State Literature Award (1993-94). Additionally, he was conferred the Maharashtra State Award three times, the Vinda Karandikar Lifetime Achievement Award (2016), Damani Sahitya Award (1991), Phi Foundation Award (1991) and All India Marathi Science Council Honor (1996). Other notable accolades include the Maharashtra Foundation's Gaurav Award (2003), Venu Memon Lifetime Achievement Award (2007), Nagbhushan Award (2008), Vasundhara Sanman (2009) and Bharati Vidyapeeth Jeevansadhana Award (2013).

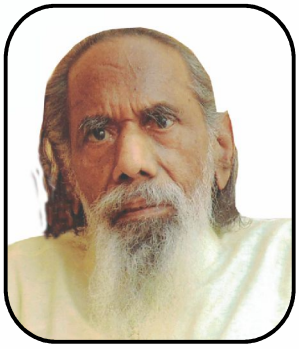

श्री मारुती भुजंगराव चितमपल्ली

श्री मारुती भुजंगराव चितमपल्ली एक प्रसिद्ध भारतीय प्रकृतिवादी, वन्यजीव संरक्षणवादी और मराठी लेखक हैं, वह वन संरक्षण और पर्यावरण जागरूकता के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति हैं।

2. 5 नवंबर, 1932 को जन्मे, श्री चितमपल्ली ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा टी.एम. पोर स्कूल और नॉर्थकोट टेक्निकल हाई स्कूल, सोलापुर (1952–53) में प्राप्त की। उन्होंने सोलापुर के दयानंद कॉलेज में अपनी उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पूरी की। वर्ष 1958 में, उन्होंने तमिलनाडु के कोयंबटूर में स्टेट फॉरेस्ट सर्विस कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ उन्होंने दो वर्ष का वानिकी कार्यक्रम पूरा किया और वर्ष 1960 में स्नातक की शिक्षा पूरी की। इस शिक्षा ने महाराष्ट्र वन विभाग में उनके प्रतिष्ठित करियर की नींव रखी, वह महाराष्ट्र राज्य वन विभाग में शामिल हो गए, जहाँ उन्होंने उप–मुख्य वन संरक्षक के रूप में सेवानिवृत्त होने तक कार्य किया।

3. श्री चितमपल्ली ने महाराष्ट्र में कई वन्यजीव अभयारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों के विकास और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनमें कर्नाला पक्षी अभयारण्य, नवेगांव राष्ट्रीय उद्यान और नागजीरा वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं। अपने प्रशासनिक योगदान के अलावा, उन्हें मराठी में उनके साहित्यिक कार्यों के लिए भी जाना जाता है, जिसने वन्यजीवों और प्रकृति के बारे में लोगों की समझ को काफी बढ़ाया है। उनके उल्लेखनीय प्रकाशनों में अन्य के साथ–साथ "जंगलाची दुनिया", "चकवचंदन", "नीलवंती" और "रणवता" शामिल हैं। उन्होंने वन्यजीव, प्रकृति और वानिकी पर मराठी में 18 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं।

4. श्री चितमपल्ली ने पारंपरिक संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया और बाद में जर्मन और रूसी का अध्ययन करके अपने भाषाई ज्ञान का विस्तार किया। उन्होंने कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक द्वारा प्राचीन भारतीय साहित्य में पर्यावरण अध्ययन में एक प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम में दाखिला लिया, जिसे सफलतापूर्वक पूरा किया। एक प्रतिष्ठित पक्षी विज्ञानी के रूप में, उन्होंने पक्षी विज्ञान में मराठी शब्दावली में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अंग्रेजी शब्द "रूकरी" (एक कौवा कॉलोनी) के लिए "काकागर" और "हेरोनरी" (बगुलों और सारसों के लिए एक प्रजनन स्थल) के लिए "सारंगागर" गढ़ा। उन्होंने मराठी पाठकों को ज्ञात "रातनिवारा" को "रोस्टिंग प्लेस" के लिए मराठी पर्याय के रूप में प्रस्तुत किया और "रायमुनिया" (पौधे लॅन्टाना कैमारा के लिए) और "अमलताश" (गोल्डन शावर ट्री के लिए) जैसे शब्दों को गढ़ा। आदिवासी संस्कृति, प्रकृति के रहस्यों और वन्यजीव व्यवहार के उनके विस्तृत दस्तावेजीकरण ने मराठी की वैज्ञानिक शब्दावली और पर्यावरण के क्षेत्र में जागरूकता का विस्तार किया है। महाराष्ट्र सरकार ने आधिकारिक तौर पर 'पक्षी सप्ताह' (पक्षी सप्ताह) को एक राज्य कार्यक्रम के रूप में घोषित किया है, जो उनके योगदान को दर्शाता है।

5. श्री चितमपल्ली को वन्यजीव संरक्षण, साहित्य और वानिकी में उनके योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। उनकी पुस्तक रानवाटा (1991) ने महाराष्ट्र राज्य साहित्य पुरस्कार (1991–92), भैरुरतन दमानी साहित्य पुरस्कार (1991) और मृण्मयी साहित्य पुरस्कार (1991) प्राप्त किया। जंगलाचं देणं (1985) को महाराष्ट्र राज्य साहित्य पुरस्कार (1989) और विदर्भ साहित्य संघ पुरस्कार (1991) मिला, जबकि रातवा (1993) को महाराष्ट्र राज्य साहित्य पुरस्कार (1993–94) से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, उन्हें तीन बार महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार, विंदा करंदीकर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (2016), दमानी साहित्य पुरस्कार (1991), फी फाउंडेशन पुरस्कार (1991) और अखिल भारतीय मराठी विज्ञान परिषद सम्मान (1996) से सम्मानित किया गया। अन्य उल्लेखनीय पुरस्कारों में महाराष्ट्र फाउंडेशन का गौरव पुरस्कार (2003), वेणु मेमन लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार (2007), नागभूषण पुरस्कार (2008), वसुंधरा सम्मान (2009) और भारती विद्यापीठ जीवनसाधना पुरस्कार (2013) शामिल हैं।